Brain International School
Vikas Puri, New Delhi

अभ्यास पत्र - 1

विषय : हिंदी **कक्षा - 12** **अप्रैल, 2025**

देवसेना का गीत, कार्नेलिया का गीत

प्रश्न 1 'देवसेना का गीत' कविता का शीर्षक सार्थक है | कैसे ?

प्रश्न 2 'श्रमित स्वप्न की मधु माया में
गहन विपिन की तरु-छाया में
पथिक उनींदी श्रुति में किसने
यह विहाग की तान उठाई|'

उपरोक्त पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए |

प्रश्न 3 'कार्नेलिया का गीत' द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?

प्रेमघन की छाया - स्मृति

प्रश्न **1** लेखक के पिता भारत जीवन प्रेम की पुस्तकें छिपा कर क्यों रखते थे ?

प्रश्न 2 मुसलमान सब-जज ने लेखक के बारे में क्या कहा ?

प्रश्न 3 'भारतेंदु-मंडल की किसी सजीव स्मृति के प्रति मेरी कितनी उत्कंठा रही होगी, यह अनुमान करने की बात है। मैं नगर से बाहर रहता था। एक दिन बालकों की मंडली जोड़ी गई। जो चौधरी साहब के मकान से परिचित थे, वे अगुआ हुए|'

उपरोक्त पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए |

सूरदास की झोंपड़ी

प्रश्न 1 सूरदास क्या काम करता था ?

प्रश्न 2 सूरदास सुभागी के बारे में क्या सोच रहा था ?

अपठित बोध

प्रश्न 1 निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं। इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्मसंस्कार के लिए थोड़ी-बहुत मानसिक स्वतंत्रता परमावश्यक है - चाहे उस स्वतन्त्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता से ही उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्म - निर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है। युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है, अपने ही आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे, ये बातें आत्म-मर्यादा के लिए आवश्यक हैं | यह सारा संसार जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है - हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे भोग, हमारे घर और बाहर की दशा, हमारे बहुत-से अवगुण और थोड़े गुण - सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है, जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है, जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मंद हो जाती है; जिसके कारण आगे बढ़ने के समय भी वह पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा उसके अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर ले जाए। सच्ची आत्मा वही है, जो प्रत्येक दशा में, प्रत्येक स्थिति के बीच अपनी राह आप निकालती है।

(1) विनम्रता के अभाव में स्वतंत्रता का महत्त्व ....

क) बढ़ जाता है | ख) घट जाता है |

ग) लोकप्रिय हो जाता है | घ) उद्देश्यपूर्ण हो जाता है |

(2) हमें अपनी आत्मा को .... रखना चाहिए |

क) उग्र ख) शांत ग) नम्र घ) शांतिप्रिय

(3) आत्म-मर्यादा के लिए कौन-कौन सी बातें आवश्यक हैं और दब्बूपन से व्यक्तित्व कैसे प्रभावित होता है ?

(4) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए |

प्रश्न 2 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

पाकर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा,
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा ?
मेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है,
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है,
फिर अंत समय तूही इसे अचल देख अपनाएगी।
हे मातृभूमि ! यह अंत में तुझमें ही मिल जाएगी।

(1) मातृभूमि से हमें क्या मिला है ?

क) खाने के लिए भोजन   ख) शरीर की रचना के लिए जरूरी पदार्थ
ग) हवा और पानी   घ) उपरोक्त सभी

(2) 'तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है' में कौन-सा अलंकार है ?

क) उपमा अलंकार   ख) अनुप्रास अलंकार
ग) अतिश्योक्ति अलंकार   घ) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

(3) मातृभूमि से हमारा संबंध कब तक रहता है ?

क) बाल्यावस्था तक   ख) किशोरावस्था तक
ग) वृद्धावस्था तक   घ) मृत्युपर्यंत तक

(4) काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए |

(5) यह काव्यांश किसे संबोधित है तथा शरीर निर्माण में इसका क्या योगदान है ?

रचनात्मक लेखन

प्रश्न ‘अचानक मेरी नींद खुल गई’ विषय पर एक रचनात्मक लेख लिखिए |